02 नवम्बर 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य :2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:30 से 7:00 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

वर्ष : 45, अंक : 15
नवम्बर (प्रथम), 2022 (वीर नि. संवत्-2549)
संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में...

वीर निर्वाणोत्सव पर निर्वाण लाडू समर्पित

जयपुर (राज.) : यहाँ 25 अक्टूबर 2022 को प्रात: पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में शासन नायक भगवान महावीर के 2549वें निर्वाण महोत्सव के अवसर पर पंचतीर्थ जिनालय में निर्मित पावापुरी की मनोहर रचना में विराजमान भगवान महावीर की प्रतिमा के समक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, श्री हीराचन्दजी वैद्य आदि बापूनगर संभाग के सैंकड़ो साधार्मियों ने निर्वाण लाडू समर्पित किया।

इस अवसर पर प्रात: देव-शास्त्र-गुरु एवं भगवान महावीरस्वामी पूजन पण्डित रिमांशुजी शास्त्री ने कराई। तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के दीपावली पर्व पर विशेष प्रवचन प्रसारण किया गया, इसके उपरान्त परस्पर लगभग 1 घंटे मार्मिक तत्त्वचर्चा की गई। रात्रि में सभी ने भक्ति-भाव से जिनेन्द्र भक्ति की।

महाविद्यालय की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों के अन्तर्गत...

साप्ताहिक विचार गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ दिनांक 18 अक्टूबर 2022 को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की गतिविधियों के अन्तर्गत तात्त्विक विचार गोष्ठियों की शृंखला में **वीर निर्वाण महोत्सव** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित संजयजी शास्त्री सेठी जयपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में प्रथम स्थान पर भव्य जैन उदयपुर एवं द्वितीय स्थान पर सिद्धान्त जैन खड़ैरी चुने गए। सत्र का संचालन वैभव जैन सागर तथा सुबलश्री समाज बेलगाव ने एवं मंगलाचरण शुभ जैन सागर ने किया। आभार-प्रदर्शन पण्डित गौरवजी शास्त्री ने किया।

डॉ. गोधा द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार का शुभारम्भ

सागर : अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा अनेक वर्षों से नियमित प्रवचन शृंखला के अन्तर्गत अनेक ग्रन्थों का शब्दश: स्वाध्याय कराया जा चुका है। इसी क्रम में 16 अक्टूबर 2022 को श्री महावीर जिनालय परकोटा सागर से समन्तभद्राचार्य विरचित रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचनों का शुभारम्भ हुआ।

कार्यक्रम के शुभारम्भ हेतु रत्नकरण्ड श्रावकाचार ग्रन्थ की शोभा यात्रा ग्रीन वैली तिली चौराहे पर पहुँची, जहाँ सर्वप्रथम विविध नगरों से पधारे श्रेष्ठी वर्ग ने ध्वजारोहण किया। श्री रमेशजी, राजेशजी, विक्रान्तजी चौधरी परिवार एवं श्री अनूपजी, हर्षुलजी परिवार सागर ने डॉ. संजीवजी गोधा को ग्रन्थ भेंट कर वाचना प्रारम्भ करने हेतु निवेदन किया। डॉ. गोधा ने इस शुभारम्भ सभा में ग्रंथकर्त्ता समन्तभद्राचार्य एवं हिन्दी वचनिकाकार पण्डित सदासुखदासजी कासलीवाल के व्यक्तित्व-कृतित्व का परिचय देते हुए रत्नकरण्ड श्रावकाचार ग्रन्थ पर प्रवचन का शुभारम्भ किया। (शेष पृष्ठ 3 पर...)

पण्डित मन्नूलालजी जैन एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का...

भव्य अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

सागर : यहाँ दिनांक 16 अक्टूबर 2022 को विशाल जनसमुदाय की उपस्थिति में श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट महावीर जिनालय परकोटा, जिनवाणी तत्त्वरसिक स्वाध्याय प्रेमी मुमुक्षु मण्डल मकरोनिया, तारण-तरण चैत्यालय सागर, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट तीर्थधाम ज्ञानोदय भोपाल द्वारा अध्यात्मवेत्ता **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** को जिनशासन की मंगल प्रभावना करने हेतु **अध्यात्म-विभूति** की उपाधि से एवं सागर के वयोवृद्ध विद्वान पण्डित मन्नूलालजी जैन वकील साहब को **जैन विद्वत्रत्न** की उपाधि से अलंकृत किया गया। (शेष पृष्ठ 3 पर...)

46 सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि...

यह जीव तत्त्वों का यथार्थ निर्णय करने के लिए कभी शास्त्रों को पढ़ता है, कभी अभ्यास करता है, कभी विचार करता है – इसप्रकार इसे अपना कार्य करने का हर्ष बहुत है; इसलिए अन्तरंग प्रीति से उनका साधन करता है। हम रोजाना प्रवचन सुनते हैं कहीं हमें ऐसा विचार तो नहीं आता कि आज समय बर्बाद हो गया। यदि ऐसा लगता हो तो हम सम्यक्त्व के सन्मुख नहीं है; क्योंकि सम्यक्त्व सन्मुख जीव के जीवन में शान्ति है, उल्लास है, वह तत्त्वज्ञान के अभ्यास से अपने जीवन को धन्य महसूस करता है।

इसप्रकार के अभ्यास से जब तक सच्चा तत्त्वश्रद्धान न हो, 'यह इसीप्रकार है' – ऐसा भावभासन न हो, अभी जैसी पर्याय में अहम् बुद्धि है वैसी ही केवल आत्मा में अहम् बुद्धि न हो जाए, हित-अहितरूप अपने भावों की पहिचान न हो जाए तब तक सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि है और जिस क्षण यह कार्य हो जाएगा उसी क्षण से सम्यग्दृष्टि हो जाएगा। यदि हमें इसप्रकार का अभ्यास है, इसका हर्ष है तो पण्डितजी कह रहे हैं कि हम भी थोड़े ही काल में सम्यक्त्व को प्राप्त कर लेंगे।

यहाँ कोई कहे कि सम्यक्त्व होने के पहले ही जीवन पूरा हो गया तो? उससे पण्डित कहते हैं कि यह अभ्यास तुझे अन्य पर्याय में भी सम्यक्त्व की प्राप्ति कराएगा। यदि तू तिर्यंच गति में भी चला गया तो इस अभ्यास/संस्कार के बल से देव-शास्त्र-गुरु के निमित्त मिले बिना भी तुझे सम्यक्त्व की प्राप्ति हो जाएगी। कई अभ्यासी ऐसा कहते देखे जाते हैं कि हमें तो अभ्यास करते-करते जिंदगी निकल गई; लेकिन अभी तक सम्यग्दर्शन नहीं हुआ, यह पंक्ति उन्हें निश्चिन्त करने वाली है। पण्डितजी कहते हैं कि ऐसे अभ्यास के बल से मिथ्यात्व कर्म का अनुभाग हीन होता है और जहाँ/जिस समय मिथ्यात्व का उदय न हो वहीं सम्यक्त्व हो जाता है।

हमें तो मात्र अभ्यास करने पर ध्यान देना है, सम्यक्त्व तो हमारे पीछे-पीछे आएगा। सम्यक्त्व तो पर्याय है, हमें अपना उपयोग तो त्रिकाली ध्रुव पर केन्द्रित करना है। त्रिकाली ध्रुव चैतन्य को देखने वाले के सम्यक्त्व स्वयं ही परिणति में आ जाता है।

देखो, तत्त्वविचार की महिमा! तत्त्वविचार से रहित देवादिक की प्रतीति करे, बहुत शास्त्रों का अभ्यास करे, व्रतादिक पाले, तपश्चरणादि करे – उसको तो सम्यक्त्व होने का अधिकार नहीं और तत्त्वविचार वाला इनके बिना भी सम्यक्त्व का अधिकारी होता है।

श्रीमद् राजचन्द्रजी ने लिखा है कि – **'कर विचार तो पाम'**

अनादिकाल से इस जीव ने सिर्फ तत्त्वविचार ही नहीं किया; बाकि सभी क्रियाकाण्ड किए हैं और तत्त्वविचार करने वाला जीव इन सब क्रियाकाण्डों के बिना भी सम्यक्त्व का अधिकारी हो गया।

देखो! यहाँ तत्त्वविचार वाले को सम्यक्त्व का अधिकारी कहा है, इसे सम्यक्त्व हो ही जाएगा – ऐसा कोई नियम नहीं है; क्योंकि सम्यक्त्व तो तत्त्व का निर्णयकर वैसी ही प्रतीति करने पर होगा।

अब यहाँ सम्यक्त्व की प्रक्रिया समझाने के लिए पंचलब्धियों के स्वरूप का वर्णन करते हैं।

पाँच लब्धियों का स्वरूप...

ज्ञानावरणादि कर्मों का क्षयोपशम इसका नाम **क्षयोपशम लब्धि**, मोह के मन्द होने पर विचार हो सके सो **विशुद्धि लब्धि** तथा जिनेन्द्र भगवान के उपदेश का निर्धारण हो, विचार हो वह **देशना लब्धि**। यह तीन कार्य तो पूर्व पुण्य कर्म के उदय से स्वयमेव बिना कुछ किए ही हो गए।

अब जो चौथी प्रायोग्य लब्धि है, इसमें भेदविज्ञान/तत्त्वज्ञान का अभ्यास करना है। यहाँ अपने विवेक से कुछ करना है और यही अभ्यास हमने अभी तक नहीं किया; बाकि दुनियादारी के कार्य हमने खूब किए हैं। गजब की बात तो यह है कि ये चारों लब्धियाँ भव्य और अभव्य दोनों को हो जाती हैं अर्थात् इन चार लब्धियों के होने पर सम्यक्त्व का कोई नियम नहीं है; लेकिन पाँचवी करणलब्धि के होने पर नियम से सम्यक्त्व होता ही है।

इस करणलब्धि की प्राप्ति के लिए बुद्धि पूर्वक तो इतना ही उद्यम करना कि तत्त्वविचार में उपयोग को तद्रूप होकर लगाए। आत्मा का विचार करते हुए **'यही मैं हूँ', 'ऐसा ही मेरा स्वरूप है'** – ऐसा भावभासन ही मात्र बुद्धि पूर्वक करना है; बाकी कर्मों की अवस्थाएँ तो स्वयं ही बदलती जायेगी।

करणलब्धि में तीन प्रकार के परिणाम अर्थात् करण होते हैं। जहाँ पहले और पिछले समयों के परिणाम समान हों वह अधःकरण, जिसमें पहले और पिछले समय के परिणाम समान न हों, अपूर्व ही हों; सो अपूर्वकरण तथा जहाँ समान समयवर्ती जीवों

के परिणाम समान ही होते हों और भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम असमान ही होते हों, **निवृत्ति** अर्थात् परस्पर भेद, **अ** अर्थात् उससे रहित होते हों, इसका नाम अनिवृत्तिकरण है।

प्रथम तो अन्तर्मुहूर्त काल तक अध:करण होता है फिर अध:करण के समय के संख्यातवें भाग बराबर अपूर्वकरण होता है तत्पश्चात् अपूर्वकरण के समय के भी संख्यातवें भाग बराबर अनिवृत्तिकरण होता है।

यहाँ तीन प्रकार के करणों का संक्षिप्त वर्णन किया। इस समय में होने वाले परिणामों की तारतम्यता केवलज्ञानगम्य है, जिसका निरूपण करणानुयोग के शास्त्रों में विस्तार से किया गया है।

देखो! परिणामों की विचित्रता कोई जीव तो ग्यारहवें गुणस्थान में यथाख्यातचारित्र प्राप्त करके पुन: मिथ्यादृष्टि होकर किंचित न्यून अर्द्धपुद्गलपरावर्तन काल पर्यंत संसार में रुलता है और कोई नित्य निगोद से निकलकर मनुष्य होकर मिथ्यात्व से छूटने के पश्चात् अन्तर्मुहूर्त काल में केवलज्ञान प्राप्त करता है - **ऐसा जानकर अपने परिणाम बिगड़ने का भय रखना और उनके सुधारने का उपाय करना**। एक ही स्थान पर बैठकर प्रवचन सुनते हुए किसी को लगता है कि और नई-नई बातें आयें और किसी को लगता है कि अब बस खत्म करें। एक ही व्यक्ति के किसी समय में दान देने के भाव बनते हैं और अगले ही समय नष्ट हो जाते हैं।

इसप्रकार सातवें अधिकार में चार प्रकार के जैनमत वाले मिथ्यादृष्टियों के अन्तर्गत अन्तिम सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टियों के स्वरूप का निरूपण किया।

अन्त में टोडरमलजी कहते हैं कि हमने नाना प्रकार के मिथ्यादृष्टियों का कथन किया, उसका प्रयोजन मात्र इतना है कि वैसे दोष यदि अपने में दिखें तो उन्हें दूर करके सम्यक् श्रद्धानी होना; लेकिन औरों के वैसे ही दोष देख-देख कर कषायी नहीं होना; क्योंकि अपना भला-बुरा तो अपने परिणामों से होता है। दूसरों में यदि कोई रुचिवंत दिखे, पात्र दिखे, मन्द कषायी दिखे तो उसे उपदेश देकर उसका भी भला करना। सदैव अपने परिणाम सुधारने का उपाय करना ही योग्य है। सर्वप्रकार के मिथ्यात्व भाव छोड़कर सम्यग्दृष्टि होना योग्य है।

अरे भाई! सम्यक्त्व मोक्ष का मूल है और मिथ्यात्व संसार का। मिथ्यात्व के समान अन्य कोई पाप नहीं है।

इसप्रकार सूक्ष्म भूलों को निकालकर पण्डितजी ने मिथ्यात्व को छोड़ने और सम्यक्त्व प्राप्त करने की प्रेरणा दी। **(क्रमश:)**

(पृष्ठ 1 का शेष..) इस प्रसंग पर श्री कमलजी बोहरा कोटा द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार ताम्रपत्र पर तैयार कराकर महावीर जिनालय सागर को भेंट दिया गया, जिसे जिनमंदिर में विराजमान करने का सौभाग्य कल्पनाबेन, पंकजजी, संजीवजी परिवार को प्राप्त हुआ।

डॉ. गोधा ने बताया कि सत्पथ फाउण्डेशन नागपुर द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार ग्रन्थ पर आधारित 1008 प्रश्न तैयार कर प्रश्नमंच का भव्य आयोजन किया जाएगा, जिसके रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया शीघ्र ही प्रारम्भ की जाएगी। आप Dr. Sanjeev Godha youtube के माध्यम से प्रतिदिन रात्रि 8:00 बजे से ग्रन्थ के आद्योपान्त स्वाध्याय का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

सागर (महावीर जिनालय) : यहाँ 12 से 16 अक्टूबर 22 तक श्री महावीर जिनालय परकोटा में रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के उपरान्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के प्रात: समयसार के पुण्य-पाप अधिकार एवं रात्रि में भक्ति के पश्चात् भक्तामर स्तोत्र पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. नन्हे भैया सागर व पं. अशोकजी उज्जैन ने सम्पन्न कराए। इस प्रसंग पर जिनालय में विशेषरूप से तैयारकर लगाये गये विविध चित्रपटों का अनावरण किया गया।

सागर (तारण-तरण चैत्यालय) : यहाँ 17-18 अक्टूबर 22 को डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रात: समयसार एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। ज्ञातव्य है कि 17 अक्टूबर को दोपहर में **दमोह (म.प्र.)** के साधर्मियों को डॉ. संजीवजी गोधा के विशेष व्याख्यान का लाभ मिला। सागर में आयोजित कार्यक्रमों का संयोजन श्री सुनीलजी सराफ ने किया।
दोनों कार्यक्रमों का स्थानीय समाज के सैंकड़ों साधर्मियों ने लाभ लिया।

पृष्ठ 1 से...अभिनन्दन समारोह... यह समारोह सागर विधायक शैलेन्द्रजी जैन के मुख्य आतिथ्य एवं श्री आई.एस. जैन मुम्बई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई, श्री प्रदीपजी पाटनी इंदौर, श्री गुलाबजी सेठ सागर, श्री अशोकजी जैन ज्ञानोदय भोपाल, श्री प्रमोदजी जैन विदिशा, श्री सुभाषजी कटनी, श्री सुधीरजी जैन कटनी, डॉ. भरतजी जैन उज्जैन, श्री जितेन्द्रजी जैन मलकापुर, श्री अजयजी जैन गौरझामर, श्रीमती लवलीजी जैन सागर (ए.एस.पी.) आदि मंचासीन थे। अतिथियों द्वारा दोनों विद्वानों को तिलक, माला, साफा, शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। प्रशस्ति पत्र का वाचन पण्डित अखिलेशजी शास्त्री ने किया। स्वागत भाषण श्री सुनीलजी सराफ, संचालन श्री प्रियंकजी शास्त्री एवं आभार-प्रदर्शन श्री अतुलजी सतभैया ने किया। **- अमित 'अरिहंत'**

दिन का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
द्वितीय	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
तृतीय	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
चतुर्थ	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
पंचम	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
षष्ठ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
सप्तम	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
अष्टम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

जैनपथप्रदर्शक : जैनतिथिदर्पण

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर-३०२०१५

१ जनवरी, २०२३ से ३१ दिसम्बर, २०२३ तक

श्री वीर निर्वाण सं. २५४९-२५५० : विक्रम सं. २०७९-८०

रात का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
द्वितीय	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तृतीय	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चतुर्थ	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पंचम	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
षष्ठ	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सप्तम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
अष्टम	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

मास →	पौष (१-६ जनवरी)		माघ (७ जनवरी से ५ फरवरी)				फाल्गुन (६ फरवरी से ७ मार्च)			
पक्ष →	शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल	
तिथि ↓	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा	X	X	७	श	२२	र	६	सो	२१×	मं
द्वितीया	X	X	८/९	र/सो	२३	सो	७	मं	२१	मं
तृतीया	X	X	१०	मं	२४	मं	८	बु	२२	बु
चतुर्थी	X	X	११	बु	२५	बु	९	गु	२३	गु
पंचमी	X	X	१२	गु	२६	गु	१०	शु	२४	शु
षष्ठी	X	X	१३	शु	२७	शु	११/१२	श/र	२५	श
सप्तमी	X	X	१४	श	२८	श	१३×	सो	२६	र
अष्टमी	X	X	१५	र	२९	र	१३	सो	२७*	सो
नवमी	X	X	१६	सो	३०	सो	१४	मं	२८	मं
दशमी	जन.२०२३ १	र	१७	मं	३१	मं	१५	बु	मार्च १	बु
एकादशी	२	सो	१८	बु	फरवरी १	बु	१६	गु	२/३	गु/शु
द्वादशी	३	मं	१९	गु	२	गु	१७	शु	४	श
त्रयोदशी	४	बु	२०×	शु	३	शु	१८	श	५	र
चतुर्दशी	५	गु	२०*	शु	४	श	१९	र	६	सो
पूर्णिमा/अमा.	६	शु	२१	श	५	र	२०	सो	७	मं

मास →	चैत्र (८ मार्च से ६ अप्रैल)				वैशाख (७ अप्रैल से ५ मई)				ज्येष्ठ (६ मई से ४ जून)			
पक्ष →	कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल	
तिथि ↓	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा	८	बु	२२	बु	७	शु	२१×	शु	६	श	२०	श
द्वितीया	९	गु	२३	गु	८	श	२१*	शु	७	र	२१	र
तृतीया	१०	शु	२४	शु	९	र	२२*	श	८	सो	२२	सो
चतुर्थी	११	श	२५	श	१०×	सो	२३	र	९	मं	२३	मं
पंचमी	१२	र	२६	र	१०	सो	२४/२५	सो/मं	१०	बु	२४*	बु
षष्ठी	१३	सो	२७	सो	११	मं	२६	बु	११	गु	२५	गु
सप्तमी	१४	मं	२८	मं	१२	बु	२७	गु	१२×	शु	२६/२७	शु/श
अष्टमी	१५	बु	२९	बु	१३	गु	२८	शु	१२	शु	२८	र
नवमी	१६*	गु	३०	गु	१४	शु	२९	श	१३	श	२९	सो
दशमी	१७	शु	३१	शु	१५	श	३०	र	१४	र	३०	मं
एकादशी	१८	श	अप्रैल १	श	१६	र	मई १	सो	१५	सो	३१	बु
द्वादशी	१९×	र	२	र	१७	सो	२	मं	१६	मं	जून १	गु
त्रयोदशी	१९	र	३*	सो	१८	मं	३	बु	१७	बु	२	शु
चतुर्दशी	२०	सो	४	मं	१९	बु	४	गु	१८	गु	३	श
पूर्णिमा/अमा.	२१	मं	५/६	बु/गु	२०	गु	५	शु	१९	शु	४	र

मास →	आषाढ़ (५ जून से ३ जुलाई)				श्रावण (प्रथम) (४ जुलाई से १ अगस्त)				श्रावण (द्वितीय) (२ अग. से ३१ अगस्त)			
पक्ष →	कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल	
तिथि ↓	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा	५×	सो	१९	सो	४*	मं	१८	मं	२	बु	१७	गु
द्वितीया	५	सो	२०	मं	५	बु	१९	बु	३	गु	१८	शु
तृतीया	६	मं	२१	बु	५×	बु	२०	गु	४	शु	१९	श
चतुर्थी	७	बु	२२	गु	६	गु	२१/२२	शु/श	५	श	२०	र
पंचमी	८	गु	२३	शु	७	शु	२३	र	६×	र	२१	सो
षष्ठी	९	शु	२४	श	८	श	२४*	सो	६	र	२२	मं
सप्तमी	१०	श	२५	र	९	र	२५	मं	७	सो	२३*	बु
अष्टमी	११	र	२६*	सो	१०	सो	२६	बु	८	मं	२४	गु
नवमी	१२	सो	२७	मं	११	मं	२७	गु	९	बु	२५	शु
दशमी	१३	मं	२८	बु	१२	बु	२८	शु	१०	गु	२६	श
एकादशी	१४	बु	२९	गु	१३	गु	२९	श	११	शु	२७	र
द्वादशी	१५×	गु	३०	शु	१४	शु	३०	र	१२	श	२८	सो
त्रयोदशी	१५	गु	जुलाई १	श	१५	श	३१×	सो	१३/१४	र/सो	२९	मं
चतुर्दशी	१६	शु	२	र	१६	र	३१	सो	१५	मं	३०*	बु
पूर्णिमा/अमा.	१७/१८	श/र	३	सो	१७	सो	अगस्त १	मं	१६	बु	३१×	गु

मास →	भाद्रपद (३१ अग. से २९ सित.)				आश्विन (३० सित. से २८ अक्टू.)				कार्तिक (२९ अक्टू. से २७ नव.)			
पक्ष →	कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल	
तिथि ↓	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा	३१*	गु	१५/१६	शु/श	३०	श	१५	र	२९	र	१४	मं
द्वितीया	सितम्बर १	शु	१७	र	अक्टूबर १	र	१६	सो	३०	सो	१५*	बु
तृतीया	२	श	१८	सो	२×	सो	१७	मं	३१	मं	१६	गु
चतुर्थी	३	र	१९*	मं	२	सो	१८	बु	नवम्बर १	बु	१७	शु
पंचमी	४	सो	२०	बु	३	मं	१९	गु	२	गु	१८	श
षष्ठी	५	मं	२१	गु	४	बु	२०	शु	३	शु	१९×	र
सप्तमी	६	बु	२२	शु	५	गु	२१	श	४	श	१९	र
अष्टमी	७	गु	२३	श	६	शु	२२	र	५	र	२०*	सो
नवमी	८	शु	२४×	र	७/८	श/र	२३	सो	६	सो	२१	मं
दशमी	९	श	२४*	र	९	सो	२४	मं	७	मं	२२	बु
एकादशी	१०	र	२५	सो	१०	मं	२५	बु	८/९	बु/गु	२३	गु
द्वादशी	११	सो	२६	मं	११	बु	२६	गु	१०	शु	२४	शु
त्रयोदशी	१२	मं	२७*	बु	१२	गु	२७×	शु	११	श	२५	श
चतुर्दशी	१३	बु	२८*	गु	१३	शु	२७	शु	१२	र	२६	र
पूर्णिमा/अमा.	१४	गु	२९	शु	१४*	श	२८	श	१३*	सो	२७	सो

मास →	मार्गशीर्ष (२८ नव. से २६ दिस.)				पौष (२७-३१ दिस.)	
पक्ष →	कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण	
तिथि ↓	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा	२८	मं	१३	बु	२७	बु
द्वितीया	२९	बु	१४	गु	२८	गु
तृतीया	३०	गु	१५	शु	२९/३०	शु/श
चतुर्थी	दिसम्बर १	शु	१६	श	३१	र
पंचमी	२	श	१७	र	X	X
षष्ठी	३	र	१८	सो	X	X
सप्तमी	४	सो	१९	मं	X	X
अष्टमी	५	मं	२०	बु	X	X
नवमी	६	बु	२१	गु	X	X
दशमी	७	गु	२२×	शु	X	X
एकादशी	८	शु	२२	शु	X	X
द्वादशी	९	श	२३	श	X	X
त्रयोदशी	१०	र	२४	र	X	X
चतुर्दशी	११	सो	२५	सो	X	X
पूर्णिमा/अमा.	१२	मं	२६	मं	X	X

× तिथि क्षय * जैनव्रत एवं पर्व

जैन व्रत एवं पर्व :

ऋषभदेव निर्वाण दिवस – २० जनवरी, २०२३
पंचकल्याणक वार्षिक महोत्सव – २४ से २६ फरवरी, २०२३
श्री ऋषभदेव जयन्ती – १६ मार्च, २०२३
अष्टाह्निका : (१) २७ फरवरी से ७ मार्च, २०२३
(२) २६ जून से ३ जुलाई, २०२३
(३) २० से २७ नवम्बर, २०२३

श्री महावीर भगवान जयन्ती – ३ अप्रैल, २०२३
श्री कानजीस्वामी जयन्ती – २१ अप्रैल, २०२३
अक्षय तृतीया – २२ अप्रैल, २०२३
श्रुत पंचमी – २४ मई, २०२३
वीर शासन जयन्ती – ४ जुलाई, २०२३
टोडरमल महाविद्यालय स्थापना दिवस – २४ जुलाई, २०२३

मोक्ष सप्तमी (पार्श्व. निर्वाण) – २३ अगस्त, २०२३
रक्षा बन्धन – ३० अगस्त, २०२३
सोलहकारण व्रत – ३१ अगस्त से ... सितम्बर, २०२३
दशलक्षण व्रत – १९ सितम्बर से २८ सितम्बर, २०२३
पुष्पांजलि व्रत – १९ सितम्बर से २३ सितम्बर, २०२३

सुगन्ध दशमी – २४ सितम्बर, २०२३
रत्नत्रय व्रत – २७ से २९ सितम्बर, २०२३
अनन्त चतुर्दशी – २८ सितम्बर, २०२३
श्री भगवान महावीर निर्वाणोत्सव (दीपावली) – १३ नवम्बर, २०२३
श्री कानजीस्वामी स्मृति दिवस – १५ नवम्बर, २०२३

शिक्षण प्रशिक्षण शिविर – २१ मई से ४ जून, २०२३
महाविद्यालय शिविर – १३ से २० अगस्त, २०२३
शिक्षण शिविर – २२ से २९ अक्टूबर, २०२३

अनुज कुमार जैन 'ज्योतिर्विद' परामर्श सूत्र- 9837713598
अलीगंज, जिला-एटा (उ.प्र.) के सौजन्य से

• महाकाव्य : भरत का अन्तर्द्वन्द्व •

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

द्वितीय अध्याय

प्रातः उठते भरत ने, अन्तर्मुख हो आप।
सबसे पहले ही किया, णमोकार का जाप।।1।।
अन्तर्मुख हो किया फिर, निज आतम का ध्यान।
और चिन्तवन तत्त्व का, करने लगे महान।।2।।

(वीर)

जिनदर्शन जिनपूजन कर श्री जिनवर की स्तुती महान।
वन्दन अभिनन्दन करके श्री ऋषभदेव का कर गुणगान।।
परीजनों के साथ भरत ने किया मधुरतम स्वल्पाहार।
और पूर्ण सज्जित होकर फिर पहुँचे भरत राजदरबार।3।

पहले से ही भरा हुआ सारा दरबार उपस्थित था।
भरतराज ने पुत्र जन्म के उत्सव का आदेश दिया।।
सभी जनों का मन मानो तैयार तो पहले से ही था।
सबकी तैयारी पूरी थी केवल आदेश प्रतीक्षित था।4।

आदेश मिला तो सभी लोग पूरे मन से सन्नद्ध हुये।
जुट गये सभी तन से मन से अर सभी उल्लसित जीवन से।।
करी सजावट जन–जन ने अपने–अपने घर आँगन की।
झिलमिलझिलमिलहोउठानगरशोभाथीअद्भूतप्राङ्गणकी।

मधुर गीत–संगीत नृत्य सब घर–घर में आरम्भ हुये।
अरे नगर के जन–जन के थे मन अति ही उत्साह भरे।।
राजमहल की दिव्य सजावट अरे देखने लायक थी।
और सभी की भावभंगिमा अति उत्साह विधायक थी।6।

गली–गली में नर–किन्नर सब मधुर गीत–संगीत भरे।
एक–दूसरे को बधाइयाँ दे देकर उल्लसित हुये।।
उत्साहित होकर चलते सब मानो उनके मन नाच रहे।
रे मन्त्र मुग्ध से थे वे सब एवं अति ही उल्लास भरे।7।

भरतराज की भावभंगिमा अरे देखने लायक थी।
मन्द–मन्द मुस्कान भरत की अति आनन्दविधायक थी।।
सहजभाव से सभी जनों से मिलना–जुलना अनुपम था।
भेदभाव के बिना सभी को गले लगाना अद्भुत था।8।

निश्चयप्रेमी भरतराज का सद्व्यवहार अलौकिक था।
ज्ञायक के ज्ञाता–दृष्टा का सब सभ्याचरण अलौकिक था।।
अपने में रमने वाले के लौकिक सम्बन्ध अलौकिक थे।
अपने में जमने वाले के सारे व्यवहार अलौकिक थे।।9।।

अपने में हैं या जन–जन में जन–जन कुछ जान नहीं पाता।
उनकी इस अद्भुत लीला को कोई पहिचान नहीं पाता।।
अरे आतमा के प्रेमी निज आतम में ही मगन रहें।
साधर्मी भाई–बहिनों से वे प्रेमभाव से मिलें–जुलें।10।

अरे सभी सामान्यजनों को जो चाहा वह दान दिया।
आत्माराधक गुणीजनों का यथायोग्य सन्मान किया।।
संयमधारी गुरुवर्यों को अनुद्दिष्ट आहार दिया।
ज्ञानपिपासु मुमुक्षुओं को उनने आतम ज्ञान दिया।11।

अरे सभी को याद किया जन्मोत्सव में भरतेश्वर ने।
सभी बन्धुओं को सादर आमंत्रण भेजे थे उनने।।
सब आये सबने मिलजुलकर रे उत्सव का आनन्द लिया।
और सभी ने मिलजुलकर रे एक साथ जलपान किया।12।

भरतराज राजेश्वर थे युवराज श्री बाहूबलि थे।
अतः बगल में बैठाया बाहूबलि को भरतेश्वर ने।।
और सभी को यथायोग्य सिंहासन पर बैठाया था।
सभी प्रतिष्ठित लोगों को उच्चासन पर बैठाया था।13।

अरे आज के उत्सव में जो–जो आये थे उन सबका।
भरतेश्वर ने यथायोग्य सत्कार और सन्मान किया।।
और कहा कल चक्ररत्न के स्वागत का उत्सव होगा।
उसमें भी शामिल होकर उसको शोभित करना होगा।14।

(क्रमशः)

वैराग्य समाचार

जैथल निवासी **पंडित धर्मचन्दजी जैन सेठिया** का 27 अक्टूबर 2022 को शान्त परिणामों से स्वर्गवास हो गया। आप तत्त्वज्ञान की रूचि रखने वाले गुरूदेवश्री के अनन्य भक्त तो थे ही साथ ही अपने पूरे परिवार को भी वीतरागी तत्त्वज्ञान से जोड़ा। आप प्रतिवर्ष दशलक्षण महापर्व के अवसर पर तत्त्वप्रचारार्थ समाज में जाते थे। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों में भी सक्रियता से जुड़े रहे।

तीर्थधाम सिद्धायतन के संस्थापक अध्यक्ष का निधन

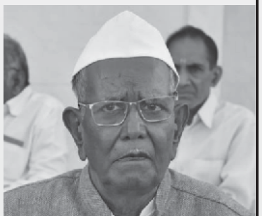

धुवारा निवासी **श्री चन्द्रभानजी जैन (नन्नाजी)** का दिनांक 27 अक्टूबर 2022 को शान्त परिणामों से देहवियोग हो गया।

आपका पूरा जीवन तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित था। सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि सिद्धायतन की संकल्पना, निर्माण एवं सफल संचालन में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। सिद्धायतन के अनेक विद्यार्थी आज देशभर में तत्त्वज्ञान की प्रभावना में संलग्न है। आपने धुवारा में भी गणेशप्रसादजी वर्णी महाविद्यालय की स्थापन में आपका विशेष योगदान रहा। आपने अपना सम्पूर्ण जीवन एक सच्चे आत्मार्थी के तरह व्यातीत किया। आप जीवनपर्यंत तत्त्वप्रचार की गतिविधियों से सक्रियता से जुड़े रहे। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के साथ आपका गहरा आत्मीय सम्बन्ध था। अनेक नाजुक अवसरों पर ट्रस्ट के साथ मजबूत स्तम्भ के रूप में खड़े रहे। आपका वियोग एक अपूरणीय क्षति है।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

तीर्थधाम मंगलायतन : यहाँ वीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर दिनांक 23 से 27 अक्टूबर 2022 तक श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट अलीगढ़ एवं श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रात: समयसार व सायंकाल श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार, पण्डित विमलदादा झांझरी, पण्डित जे. पी. दोशी, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, पण्डित सचिनजी जैन, ब्र. कल्पनाबेन के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

ध्वजारोहणकर्ता श्री अनिल-ज्योतिजी जैन उज्जैन, शिविर उद्घाटनकर्ता डॉ. अशोकजी, श्री विजयजी बड़जात्या परिवार इन्दौर एवं विधान आमन्त्रणकर्ता श्रीमती अर्चना-नरेशजी जैन परिवार ग्वालियर एवं श्री शान्तनुजी जैन थे। प्रतिदिन विविध विधान पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर के निर्देशन में पण्डित दिव्यांश शास्त्री अलवर, पण्डित सन्देश शास्त्री दिल्ली व पण्डित समकित ईसागढ़ ने कराए।

25 अक्टूबर वीर निर्वाण दिवस पर शोभायात्रा सहित मङ्गलायतन स्थित कैलाशपर्वत पर कृत्रिम पावापुरी की रचना की गयी और भगवान महावीर के प्रक्षाल पूजन सहित प्रथम श्रीफल श्री सुनीलजी गाँधी पुणे द्वारा समर्पित किया गया। शिविर का परिचय पण्डित अरहन्तप्रकाशजी झांझरी, मङ्गलायतन का परिचय पण्डित अशोकजी लुहाड़िया एवं आभार प्रदर्शन पण्डित सुधीरजी शास्त्री ने किया। बाल मंगलार्थियों द्वारा प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम श्रीमती अनुभूतिजी लुहाड़िया के निर्देशन में हुए।

इस अवसर पर श्री नगेशजी जैन पिड़ावा, डॉ. योगेशचन्द्रजी अलीगंज, पण्डित ऋषभजी उस्मानपुर, पण्डित हितेशजी चौबटिया, ब्र. सुकुमाल झांझरी उज्जैन, अमितजी अरिहंत मडावरा, डॉ. बासन्तीबेन शाह मुंबई, ब्र. पुष्पलताजी जैन, ब्र. समताबेन, ब्र. ज्ञानधाराबेन, उज्जैन आदि का समागम रहा।

सिद्धायतन में कीर्तिस्तभ : एक अनोखा प्रयास

द्रोणगिरि : यहाँ 16 अक्टूबर 2022 को समयसार संप्राप्ति वर्ष एवं आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि में 21 फुट उन्नत कीर्तिस्तंभ का लोकार्पण किया गया। तीर्थधाम सिद्धायतन के संस्थापक अध्यक्ष श्री चंद्रभानजी जैन परिवार घुवारा के आर्थिक सहयोग से निर्मित इस कीर्तिस्तंभ का लोकार्पण मध्यप्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल के द्वारा ऑनलाइन किया गया एवं शिलान्यास श्री इंद्रजीतजी गंगवाल इंदौर परिवार की ओर से किया गया।

इस कीर्तिस्तंभ में आचार्य कुन्दकुन्ददेव विरचित समयसार परमागम की 100 मूल गाथायें पद्यानुवाद सहित टंकोत्कीर्ण की गई हैं एवं 8 पट्टों पर तीर्थधाम सिद्धायतन, आचार्य कुन्दकुन्ददेव व गुरुदेवश्री का परिचय एवं निर्माणकर्ता के नामों के साथ ही बुंदेलखण्ड के 281 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के नाम जिलेवार उत्कीर्ण किए गए हैं।

देश में प्रथम वार जैन समाज के गौरवशाली इतिहास का परिचित कराने वाले शिलापट्ट लगाए गए, जिसमें देश की आजादी में प्राण न्योछावर करने वाले 20 शहीदों, दांडी यात्रा में सम्मिलित हुई महिला एवं संविधान निर्मात्री सभा के 6 सदस्यों के नाम अंकित किए गए हैं। पण्डित अभयकुमारजी देवलाली की प्रेरणा से जैन समाज के गौरवशाली इतिहास से परिचय कराने का यह एक छोटा सा प्रथम प्रयास है।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये
vitragvani app Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 अक्टूबर 2022

प्रति,